

सूक्ष्म जलवायु

पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार के जलवायु क्षेत्र पाए जाते हैं। अलग-अलग जलवायु प्रदेशों में पाई जाने वाली वनस्पति, जीव-जंतु आदि में अंतर पाया जाता है।
वस्तुतः जलवायु एक व्यापक शब्द है।

- वस्तुतः जलवायु क्षेत्र पर लंबी अवधि के दौरान मौसम के घटकों यथा- तापमान, आर्द्रता, वायुदाब, पवन आदि के औसत को जलवायु कहते हैं। ध्यातव्य है कि लंबी अवधि से आशय सामान्यतः 38 वर्ष से है।

क्या है सूक्ष्म जलवायु?

- सामान्य जलवायु क्षेत्र व्यापक होते हैं। इन सामान्य जलवायु क्षेत्रों में स्थान विशेष पर जलवायुवीय विशेषताओं में (जलवायु के घटकों के आधार पर) भिन्नता देखने को मिलती है।
- वस्तुतः 'सूक्ष्म जलवायु' सामान्य जलवायु क्षेत्र के भीतर एक छोटा क्षेत्र होता है, जिसकी अपनी विशिष्ट जलवायु होती है, और हम 'सूक्ष्म जलवायु क्षेत्र' की जलवायु को 'सूक्ष्म जलवायु (Micro-climate)' कहते हैं। उदाहरणस्वरूप किसी बाग, पार्क, घाटी या पर्वतीय क्षेत्र अथवा क्षेत्रों की जलवायु। इसी प्रकार किसी स्थान के जल निकाय (Water Body) की जलवायु आसपास के क्षेत्र से अलग होगी।
- किसी क्षेत्र विशेष की जलवायु विभिन्न कारकों पर निर्भर करती है जैसे- वहाँ की भौगोलिक अवस्थिति, उच्चावच, अक्षांश, स्थलाकृति आदि।
- तापमान, वर्षा, पवन अथवा आर्द्रता के समग्र रूप से और पूरे क्षेत्र में वदियमान स्थितियों के कारण अलग-अलग होने से 'सूक्ष्म जलवायु' का मौसम भिन्न हो सकता है।
- अतः हम कह सकते हैं कि वस्तुतः सामान्य जलवायु क्षेत्रों के अंतर्गत छोटे क्षेत्र विशेष की विशिष्ट जलवायु को सूक्ष्म जलवायु कहते हैं जिसके भिन्न-भिन्न कारण हो सकते हैं। साथ ही यह जलवायु अपने आस-पास की सामान्य जलवायु से भिन्न होती है।

माइक्रोकलाइमेट (Microclimate) क्षेत्र बनने के कारण ?

- विभिन्न कारकों के प्रभाव से 'माइक्रोकलाइमेट' क्षेत्र बन सकते हैं-
 - जल निकाय की उपस्थिति
 - शहरी क्षेत्र की ऊष्मा प्रतिहारक क्षमता
 - पर्वतीय ढलान
 - वनस्पति की उपस्थिति अथवा संरक्षण क्षेत्र में वनस्पति की अधिक सघनता
 - मृदा के प्रकार आदि।

माइक्रोकलाइमेट के कुछ उदाहरण

■ उच्च भूमि क्षेत्र (Upland Regions):

- उच्च भूमि क्षेत्र की जलवायु उससे संलग्न निम्न भूमि क्षेत्र से भिन्न होती है। गौरतलब है कि ऊँचाई बढ़ने के साथ-साथ तापमान में सामान्यतः क्रमिक रूप से गिरावट आती है। तापमान में आने वाली यह गिरावट 5-10°C होती है जो आर्द्रता पर निर्भर करती है।
- पर्वतीय क्षेत्रों में तापमान वयुत्क्रमण के कारण भी माइक्रोकलाइमेट क्षेत्र का विकास होता है। यथा ठंड के मौसम में रात के समय पर्वतों की उच्च भूमि का तापमान अत्यधिक कम हो जाता है। फलस्वरूप सामान्य जलवायु से अलग विशिष्ट जलवायु का विकास होता है।

■ तटीय क्षेत्र (Coastal Regions):

- तटीय क्षेत्रों में सागर एवं स्थल दोनों की विशेषताओं का समागम होता है, अतः ये सागर एवं स्थल दोनों से प्रभावित रहते हैं।
- जल स्थलीय भाग की अपेक्षा गर्मियों में देर से गरम होता है तथा ठंड के समय देर से ठंडा होता है। इन्हीं भिन्नताओं के कारण तटीय क्षेत्र की जलवायु स्थलीय एवं जलीय दोनों क्षेत्रों से भिन्न होती है।
- उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में जलीय सतह का तापांतर कम होता है, अतः यहाँ तटीय क्षेत्रों की सूक्ष्म जलवायु संलग्न स्थलीय भाग के रात के

- शीतलन एवं दनि के उष्मन पर अधिक नरिभर करती है ।
- वही समशीतोष्ण प्रदेशों में यह तटीय माइक्रोकलाइमेट स्थल एवं तटीय भूमि की अपेक्षा समुद्र से अधिक प्रभावति होती है ।

■ वन भूमि (Forest Land):

- वन क्षेत्रों में भी माइक्रोकलाइमेट का विकास होता है । यथा- वृक्ष वाष्पोत्सर्जन द्वारा जल को वायुमंडल में स्थानांतरति करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । इसके अलावा वन आस-पास के क्षेत्र की अपेक्षा हवा एवं और प्रकाश के अधिक करते हैं ।

■ शहरी क्षेत्र (Urban Regions):

- शहरी क्षेत्रों की जलवायु माइक्रो जलवायु का ही एक उदाहरण है । यथा वभिन्न कारणों से शहर का तापमान आस-पास के क्षेत्र की अपेक्षा अधिक होता है ।
- कंक्रीट की इमारतों, पक्की सड़कों, मोटर वाहनों आदि के कारण शहर हीट आइलैंड (ऊष्मा द्वीप) में तब्दील हो जाते हैं ।
- इसके अलावा कृत्रिम एवं प्राकृतिक जलाशयों व बाँधों के पास भी माइक्रोकलाइमेट का निर्माण हो जाता है ।

नष्कर्षत: सूक्ष्म जलवायु क्षेत्र, समान्य जलवायु क्षेत्र के अंतर्गत ही होते हैं । ये मानवीय एवं प्राकृतिक दोनों गतिविधियों के कारण उत्पन्न हो सकते हैं ।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/micro-climate>

